

अजर अमर अविनाशी | By Kumaar Mukesh

हे महादेवा दया के सागर
अजर अमर अविनाशी तुम
धरती अम्बर और पाताल में
बसे हो घट घट वासी हो तुम
हे महादेवा
दया के सागर

महल अटारी बाँट दिए सब
आप बने शमशानी हो
दानव मानव को वर देते
आप बने महादानी हो
बना लिया पर्वत पे ठिकाना
कहलाये कैलाशी तुम
धरती अम्बर और पाताल में
बसे हो घट घट वासी हो तुम
हे महादेवा
दया के सागर

भस्म रमाये तन पे भोला
चंद्र विराजे माथे पे
गले में है सर्पों की माला
गंगा जटा बिराजे है
सब की नैया पार लगाते
हो शंकर वरदानी तुम
धरती अम्बर और पाताल में
बसे हो घट घट वासी हो तुम
हे महादेवा
दया के सागर

घट घट वासी भोले शंकर
तीन लोक के स्वामी हो
एक लोटे ही जल से प्रसन्न
हो जाते तुम त्रिपुरारी हो
जो कोई करता मन से सेवा
उसके बने सहाई तुम
धरती अम्बर और पाताल में
बसे हो घट घट वासी हो तुम
हे महादेवा
दया के सागर

<https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%85%e0%a4%9c%e0%a4%b0-%e0%a4%85%e0%a4%ae%e0%a4%b0-%e0%a4%85%e0%a4%b5%e0%a4%bf%e0%a4%a8%e0%a4%be%e0%a4%b6%e0%a5%80-by-kumaar-mukesh/>